

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/

श्रीगणशायनमः॥ श्रीग्रामभाइसंयमिवरणोत्तारणंविधायवाधा चंद्रका यासिद्रात्मतसेकेः संशाधयामिचेनः स्वाशाश्रीगुराहाषाद दाक्षातारशास्त्रस्यसक्षलमाचेलयन्॥सुहेतीहतिहत्रिय बुतिस्यमिशंतगोमिथःसुहदे॥ याचित्रमहात्रिममेरं ज्योति निरिहतेगुहारवरंग्स्यासु॥तद्पविदासपितसिरनेचेलाय्यम होविवि खद्रश्यिति॥ ३॥ दीपः की पिसमिधे से हद्शाधाद्र हीनमसंदः॥यस्यिक् लिमिषिक जनलम्भवज्नगदं उमङ्ग

> ACC. NO. 4428.1619 Title - actor Resmont-enforgent. A4thor - 21241208884017.

Checked 2012



सर्वस्वहरतिवं ब्रूमः॥८॥ शुचिर पिषुमान्त्रमादा छो चितमाया पिशाचिका जो तः॥ पद्यतिबहुदुः स्व भान्य मं चितप्य पंच क्रतेभ्यः॥ १॥ का मंस्यमे तुमा हा का मस्विनं ना मका कि पिश्रम हो॥ पुरुषित्रं तना सो भागास्त्र सर्वस्व पुष्प मे तस्य ॥ १०॥ वि ष्याः पुराणिको ज्ञानिश्रम निवातुर सहगवरा थः॥ संस्थितु नसंतुष्यतिसंन्ता डात्मायता बतास्वरु ः॥ १२॥ श्रह्तिविवेक हानः श्रभुरेष पुरस्यपादिन द्वारः॥ निश्लियद्वरोधे निभित्ने तिष्वंडं।४॥विस्ङातियंदेवभुवनं योमनिचनानिकाल काका कित्।पिरतायत प्रवंते ब्रह्माद्यातिधानफला मंड्काः।। सिधे पिट क्यत न्न चिन्ना नियो किका लिमाक श्चित्। सहते निव चार मसोस्डातिचक पाणिकोटिक् श्वित्रं शिद्यां शिव्यतं।। दिविस्वश्वस्त्रमादोत्ति समन्त्रिविद्यं कृटं कटा हमश्रात्रभेत मुद्रवना द्रीन्दर्शयतिम हें द्जा लिका को नु।।।।। तर् ठाणिका चिद्सत्ती से दक्षेगुणा न्यरस्य पुरुषस्य।।संगंविनेवहसितेः तत्रश्रमतम्भुम्यः॥१२॥आकि सिम्सीस्वदेशादप्यित्रिति सार्यहान्यविभुत्व। श्रुतिनयन तायम् रिभिवहिष्ट्यमहा सनोदशेयम् हा ॥१३॥तम् सिनितियहरवे दु बुद्धिवशनिन रविषयस्य। पथिपथिणणनव ध्या अमियतिपुर्षेकरा तकालभटः॥१४॥सहद्विपदाष्ट्रवचनसत्तुष्ट्रस्थायिन चक्रतंष्ठं सा॥तद्योग्रहेषुवतिभिः किंदरवत्त्वमितारितं नीतः॥१५॥सहद्यितयहविषयं। श्र्वरितिमोश्रास्ता तर्पपरः॥सहद्यितयहविषयं। श्र्वरितिमोश्रास्ता तर्पपरः॥सहद्यितयहविषयं। श्र्वरितिमोश्रास्ता

मामास्य भिक्ष च म्मा च यनु क्ये विवास विषय विश्वी श्री श्री श्री स्वार प्रमा च यनु क्ये विना सित स्वार १००१ जे मिन र धना विय न मुन मुन स्वार स्वार क्ये विना सित स्वार १००१ जे मिन र धना विय न मुन मुन स्वार स्वार के स्वार स

कि नुस्मिकि श्विनित्त्वमिसः॥२९॥ क्षे क्ष्यमहहकुतकीशितिक कि न्यार अम् कि तेषु नो न्या अद्यान विद्यान व स्वरागपाषिता पादः पिततमपिनयति निर्भय पद्वीमद्वीय सीमसीमस्ति । । । श्रीक्षित्रम् पिनासमी शोद्धः सह बृह ज न न यंत्रण शुणः। । गिति श्रिराय संज्ञां श्री श्रेर स्व वंद् ने दिवा स्वपा। २०। अक्षर्मक्ष शिक्षः युद्व के प्रमुद्दा सदे शिकः श्रीमान् । तन्शण म्यन्साक्षाद शरमक्तदास मार्घ्या । । । अव्यममस्त्र भातं स्यः शिकां प्रमुद्दा स्व वसं। । । । । अव्यममस्त्र भातं स्यः शिकां प्रमुद्दा स्व वसं। । दृष्टि विर्ण हां विश्वित वस्त्र भ्यायं। । २०। किष्यं प्रमुद्दा हो । स्व प्रमुद्दा श्री । स्व प्रमुद्दा श्री । स्व प्रमुद्दा । स्व प्रमुद् ताः सित्रं तिसाधुणण वृत्या ॥ श्रुतयोधना न्यगतयो मतयो व तिनिवास निवद नये ॥ ३९॥ सिनिधि मात्राद सत्यस्य स्वाद्य स्वाधि प्राप्त स्वाद्य प्रिक्ता के प्रविद्य स्वाधि प्राप्त स्वाद्य प्रिक्ता स्वाद्य स्वाद्य प्रिक्ता स्वाद्य प्रिक्ता स्वाद्य प्रिक्ता स्वाद्य प्रिक्ता स्वाद्य प्रिक्ता स्वाद्य प्रिक्ता स्वाद्य स्वाद स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद स्वाद्य स्वाद स्वाद स्वाद स्वाद स्वाद स्वाद स्व हसिबाः॥३५॥ यादियमणिविधन्त बाल्यमान नपारु तित द्रेशे च्यात्तदिषम दी अवन वितयण तो याद्यापि नपण महा ॥ १६६० श्रवणम नम्धानं साधन मितम स्वयं द्रुपरे ॥ १९ णमामविद्यां तश्री गुरू बरुणा बरुष स्वया द्रुपरे ॥ १९ नहया ना थे तिन्द्रशास्त्र एणा नहु ग्रेया तो पि ॥ स्वाराज्य मिद प नहया ना थे तिन्द्रशास हु हु रा ॥ ३८॥ देशि बदा क्ष शिश पूर्व वित्त नितासि दृशिय हु हु रा ॥ ३८॥ देशि बत देश सिव सन्दि शंभिद्धां ते ने न सस्त स्वया थे यो त्र वित्त रणत मे ज सन्दि शंभिद्धां ते ने न सस्त स्वया थे यो त्र वित्त रणत मे ज विदेह सारव्यमिषाजनकश्वकार निष्क्रयसाम्यद्या चेननार्थं रोबोन॥४०॥ चिरवधिता बुभुक्षा द्यां के के तस मज निमुमु क्षाण्यारव स्व ममि क्षित्रो युगपत्रे लोक्य के बल गिलन पराण ४५॥ कथनीयमिह कि मधुना किश्यद कां हम हा नभू ख्रु ख्यः॥स्व निहित ह चिमिषिकि चित्रपद्वि चे कार्ण नी क्षतंभवनं॥४२ काषिगतायामाया कादं बिन्याक्षण नमित्द्यारहि॥किपित श्रियद्थिरासा श्रामित ब्रह्मां ड बुद्धु द करं बः॥४३॥स्वक्तं कल जिति निवस्य हित्रासी सुराज गलकले ॥ अधान वहा ष हिति कि महद्द्य हेफ्रिति चिल्हरें वे बरसं॥ ४४॥ जन मन् तमार्ति क् पंज गदिति बाल्य मुधा मया स्य कं। ॥ अधान द्वा निवस्य न्ययम धुरुमायो विली ने मे बर्से ॥ ४५॥ फेन तरंग विही नः प रिहत कलुषः खसुरव चिह्न देश सारे वेरम पारा वारः पारा वारो यमत तिपर मे बः॥ ४६॥ स्मस्य सिति निर्विद मितिस मत्रिति ति च सहज सां इसरवे॥ के वल कि इगने मिल के यम हो विफल बहुविकल्यला।४७॥इश्रृंशिनशानिश्तामश्चिद्वाहितं मितंगदितं॥आकण्यसपदिविगलित्वाद्वादःस्त्रस्वासुखाण्य ।निमन्गः॥४८॥इतिस्विवद्यस्त्रस्तुनिकुदादितं मंद्रम्णि मयागितं॥करुषा वितिश्वादिवक्षस्य तुर्वेसतामभीक्ष्ण भिद्र॥४८॥श्रामयातमुखंदोःशारद्रम्यगुरुष्रसादम्य ॥सि शामः द्वात्वद्विद्वातिसभ्यपिबत्सहदय्वकाराः॥५०॥॥६०॥६। स्त्रम्हस्त्रात्रकाचायश्चारामानदसरस्वतीवरिव्वाबदां सत्त्रमहस्त्राद्वातकाचायश्चारामानदसरस्वतीवरिव्वाबदां तामसात्वद्वाद्वासंपूर्णा। श्चीसिक्वदानदार्पणमस्त्र॥शक्षे



,CREATED=23.09.20 10:42 TRANSFERRED=2020/09/23 at 10:44:15 ,PAGES=12 ,TYPE=STD ,NAME=S0003658 Book Name=M-1619-DEDANT SIDHANT CHANDRIKA ,ORDER_TEXT= ,[PAGELIST] ,FILE1=0000001.TIF ,FILE2=00000002.TIF ,FILE3=0000003.TIF ,FILE4=0000004.TIF ,FILE5=0000005.TIF ,FILE6=0000006.TIF ,FILE7=0000007.TIF ,FILE8=0000008.TIF ,FILE9=0000009.TIF ,FILE10=0000010.TIF FILE11=0000011.TIF ,FILE12=0000012.TIF

[OrderDescription]